कोयले की आपूर्ति में करोड़ों का घपला

सम्राट कुमार

कांटी। उत्तर बिहार के लिये कांटी थर्मल पावर अरसे से सफेद हाथी बना हुआ है, पर इसका लालन-पालन उसी शाही अंदाज में हो रहा है। इस थर्मल पावर की सबसे बड़ी जरूरत है कोयला। लेकिन इसी कोयले के नाम पर करोड़ों का घोटाला अरसे से जारी है। पिछले एक महीने में इस सफेद हाथी से बिजली निकालने के लिये 12 हजार टन कोयला आया, पर जो मिट्टी साबित हुआ। उसमें बिजली तो क्या बनती, मशीनों का और चौपटाचार हो गया। ईस्टर्न कोल लिमिटेड से आये इस कोयले की दहन क्षमता मात्र 3 किलो से 14 किलो कैलोरी पायी गयी। जबकि थर्मल के लिये डीडी श्रेणी कोयले का करार हुआ था, जिसकी क्षमता 4200 से 4939 किलो कैलोरी क्षमता है। इस घटिया कोयले की आपूर्ति से थर्मल पावर को करीब एक करोड़ का चूना लगा है।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार थर्मल पावर स्टेशन में 13 अगस्त, 24 अगस्त, 26 अगस्त एवं 30 अगस्त कोयला रैक जिनकी अनुमानित मात्रा 12 हजार टन थी, एकदम नॉन ग्रेड कोयला है। इस कोयले से गत शनिवार को जब उत्पादन शुरू करने की कोशिश की गयी तो कई मशीनरी खामियां आ गयीं। परिणामतः दस लाख रुपये का एलडीओ एवं एफओ तेल खर्च करने के बावजूद उत्पादन नहीं हो सका। इस मामले की कलई ईस्टर्न कोल लिमिटेड एवं बिहार राज्य विद्युत बोर्ड के द्वारा मान्य जांच कंपनी की रिपोर्ट के बाद खुल गयी।

हाल कांटी थर्मल का

थर्मल के लिए आने वाले कोयले की जांच करने वाली कोलकाता की सुपरिटेन्डेंस कंपनी ऑफ इंडिया की जांच के अनुसार 13 अगस्त को आये कोयले की दहक क्षमता 316 किलो कैलोरी, 24 अगस्त को आये कोयले की दहक क्षमता मात्र 13 किलो कैलोरी एवं 26 अगस्त को आये कोयले की दहक क्षमता 1407 किलो कैलोरी प्रति किलोग्राम पायी गयी। उल्लेखनीय है कि बोर्ड एवं कोल कंपनी के करार के अनुसार कोल कंपनी को डी ग्रेड का कोयला आपूर्ति करना है, जिसकी दहक क्षमता 4200 से 4939 किलो कैलोरी प्रति किलोग्राम के बीच होनी चाहिए। उक्त गुणवत्ता वाले कोयले की कीमत डेढ़ रुपया प्रति किलोग्राम के हिसाब से तय है। इधर चार रेक में आवक 12 हजार टन कोयले के लिए बिहार राज्य विद्युत बोर्ड ने कोल कंपनी को एक करोड़ अस्सी लाख अदा किया है। जबकि महाप्रबंधक द्वारा बोर्ड मुख्यालय को भेजे गये पत्र एवं जांच रिपोर्ट के बाद उक्त आवक कोयले की कीमत 50 से 60 लाख के बीच आंकी जा रही है। इस संदर्भ में महाप्रबंधक द्वारा आपत्ति दर्ज कराये जाने के बाद चित्रा कोइलरी के एरिया सेल्स प्रबंधक सिद्धीकी ने सोमवार को थर्मल के कोयले का निरीक्षण किया और उपरोक्त कोयले को कारपेट कोल बता एक नये विवाद को जन्म दे दिया है। इस पूरे प्रकरण पर थर्मल के महाप्रबंधक वीपी अम्बष्ट का कहना है कि मामले की जांच चल रही है। वहीं विश्वस्त सूत्रों का कहना है कि महाप्रबंधक ने बोर्ड को एक कड़ा पत्र लिखा है कि अगर अब घटिया कोयला आया तो उसे रिसीव नहीं किया जायेगा। फिलवक्त बढ़िया कोयले की आपूर्ति तक थर्मल से उत्पादन ठप रहेगा।

कोयले की आपूर्ति

सम्राट कुमार

आपूर्ति में करोड़ों का

घपला

कांटी। उत्तर बिहार के लिये कांटी थर्मल पावर अरसे से सफेद हाथी बना हुआ है, पर इसका लालन-पालन उसी शाही अंदाज में हो रहा है। इस थर्मल पावर की सबसे बड़ी जरूरत है कोयला । लेकिन इसी कोयले के नाम पर करोड़ों का घोटाला अरसे से जारी है। पिछले एक महीने में इस सफेद हाथी से बिजली निकालने के लिये 12 हजार टन कोयला आया, पर जो मिट्टी साबित हुआ। उसमें बिजली तो क्या बनती, मशीनों का और चौपटाचार हो गया। ईस्टर्न कोल लिमिटेड से आये इस कोयले की दहन क्षमता मात्र 3 किलो से 14 किलो कैलोरी पायी गयी। जबकि थर्मल के लिये डीडी श्रेणी कोयले का करार हुआ था, जिसकी क्षमता 4200 से 4939 किलो कैलोरी क्षमता है। इस घटिया कोयले की आपूर्ति से थर्मल पावर को करीब एक करोड़ का चूना लगा है।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार थर्मल पावर स्टेशन में 13 अगस्त, 24 अगस्त, 26 अगस्त एवं 30 अगस्त कोयला रैक जिनकी अनुमानित मात्रा 12 हजार टन

थी, एकदम नॉन ग्रेड कोयला है। इस कोयले से गत शनिवार को जब उत्पादन शुरू करने की कोशिश की गयी तो कई मशीनरी खामियां आ गयीं। परिणामतः दस लाख रुपये का एलडीओ एवं एफओ तेल खर्च करने के बावजूद उत्पादन नहीं हो सका। इस मामले की कलई ईस्टर्न कोल लिमिटेड एवं बिहार राज्य विद्युत बोर्ड के द्वारा मान्य जांच कंपनी की रिपोर्ट के बाद खुल गयी।

हाल कांटी थर्मल का

थर्मल के लिए आने वाले कोयले की जांच करने वाली कोलकाता की सुपरिटेन्डेंस कंपनी ऑफ इंडिया की जांच के अनुसार 13 अगस्त को आये कोयले की दहक क्षमता 316 किलो कैलोरी, 24 अगस्त को आये कोयले की दहक क्षमता मात्र 13 किलो कैलोरी एवं 26 अगस्त को आये कोयले की दहक क्षमता 1407 किलो कैलोरी प्रति किलोग्राम पायी गयी। उल्लेखनीय है कि बोर्ड एवं कोल कंपनी के करार के अनुसार कोल कंपनी को डी ग्रेड का कोयला आपूर्ति करना है, जिसकी दहक क्षमता 4200 से 4939

किलो कैलोरी प्रति किलोग्राम के बीच होनी चाहिए। उक्त गुणवत्ता वाले कोयले की कीमत डेढ़ रुपया प्रति किलोग्राम के हिसाब से तय है। इधर चार रैक में आवक 12 हजार टन कोयले के लिए बिहार राज्य विद्युत बोर्ड ने कोल कंपनी की एक करोड़ अस्सी लाख अदा

किया है। जबकि महाप्रबंधक द्वारा बोर्ड मुख्यालय को भेजे गये पत्र एवं जांच रिपोर्ट के बाद उक्त आवक कोयले की कीमत 50 से 60 लाख के बीच आंकी जा रही है। इस संदर्भ में महाप्रबंधक द्वारा आपत्ति दर्ज कराये जाने के बाद चित्रा कोइलरी के एरिया सेल्स प्रबंधक सिद्धीकी ने सोमवार को थर्मल के कोयले का निरीक्षण किया और उपरोक्त कोयले को कारपेट कोल बता एक नये विवाद को जन्म दे दिया है। इस पूरे प्रकरण पर थर्मल के महाप्रबंधक वीपी अम्बष्ट का कहना है कि मामले की जांच चल रही है। वहीं विश्वस्त सूत्रों का कहना है कि महाप्रबंधक ने बोर्ड को एक कड़ा पत्र लिखा है कि अगर अब घटिया कोयला आया तो उसे रिसीव नहीं किया जायेगा। फिलवक्त बढ़िया कोयले की आपूर्ति तक थर्मल से उत्पादन ठप रहेगा।